International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 126-127

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 126-127
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 21-03-2018
Accepted: 22-04-2018

**डॉ. लता देवी**
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

**Correspondence**
**डॉ. लता देवी**
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

# प्रमुख पुराणों में नदियों और तीर्थों पर मनाए जाने वाले उत्सव

## डॉ. लता देवी

### प्रस्तावना
सर्वप्रथम उत्सव शब्द के अर्थ का उल्लेख किया गया है। भारत के कोने–कोने में अनेक धार्मिक उत्सव मनाए जाते हैं। कुम्भ पर्व पर भी ऐसे ही कार्यों द्वारा बहुत बड़े मेले का आयोजन होता है। यह पर्व चार तीर्थ स्थलों हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में मनाया जाता है। हर निश्चित तीर्थ पर यह बारह वर्ष बाद आता है। बिना आमन्त्रण–निमन्त्रण के लोग इस उत्सव में आकर स्नान–दान कर पापों का नाश एवं पुण्य का अर्जन करते हैं।

सनातन भारतीय संस्कृति धार्मिक उत्सवों एवं पर्वों का एक अद्भुत संयोजन है। भारत के कोने–कोने में अनेक धार्मिक उत्सव तथा पर्व मनाए जाते हैं। शब्दस्तोभ महानिधि के अनुसार उत्सव पुलिंग शब्द की व्युत्पत्ति √उद्+सू+अप् प्रत्यय से हुई है। आनन्दजनकव्यापारें विवाहादौ[1] जिसका अर्थ है आनन्द का अतिरेक।

### कुम्भपर्व
सभी पर्वों के अवसर पर जितने भी धार्मिक कृत्य किए जाते हैं, उनका सम्बन्ध ग्रह–नक्षत्रों के योग से है क्योंकि प्रत्येक कार्य के लिए शुभ मुहूर्त्त का विशेष महत्त्व है। कुम्भ पर्व ग्रह नक्षत्र का ऐसा योग है जो हर प्रकार के कार्यों के लिए शुभ एवं पवित्र माना गया है। यह संसार का सबसे बड़ा मेला है जो बिना आमन्त्रण–निमन्त्रण के आयोजित होता है।

### कुम्भ का अर्थ
कुम्भ का शाब्दिक अर्थ है घड़ा। इसका सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है। जो मिट्टी से बने पात्र का द्योतक है और आसानी से टूट जाता है। पौराणिक कोश के अनुसार कुम्भ एक पर्व का नाम है, जो निश्चित तीर्थों पर हर बाहरवें वर्ष में पड़ता है। इस पर सूर्य कुम्भ राशि में होता है अतः कुम्भ पर्व नाम पड़ा।[2] हिन्दू धर्मकोश के अनुसार इसे बारह वर्ष के अन्तराल के बाद चार मुख्य तीर्थों में लगने वाला स्नान–दान का ग्रह योग कहा है। ये चार स्थल हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक हैं।

अमृत कलश, जिसे लेकर देव और दानवों में लड़ाई छिड़ गई थी, वह देवताओं के बारह दिव्य दिनों तक चली। देवराज इन्द्र की आज्ञानुसार उनका पुत्र जयन्त अमृत कलश लेकर भागा। असुर भी युद्ध करते हुए उसके पीछे–पीछे भागे। कुम्भ को छुड़ाने के लिए छीना–झपटी के प्रयास में उससे जहाँ–जहाँ अमृत की बून्दे गिरी, उन–उन तीर्थों हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में उसी कृत्य के कारण महापर्व मनाने की परम्परा स्थापित हुई जो निरन्तर चल रही है। अब चार स्थानों में आयोजित होने वाले इस पुण्यदायक का क्रमशः वर्णन किया जा रहा है –

### हरिद्वार कुम्भ
गुरु के कुम्भ राशि में संचरण करने पर जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तो उस समय हरिद्वार में कुम्भ महापर्व का संयोग बनता है –

> पदमिनी नायके मेषे कुम्भ राशिगते गुरौ।
> गंगाद्वारे भवेदयोगः कुम्भ नामा तदोत्तमः।।[3]

इस महापर्व पर स्नान–दानादि करने पर मनुष्य को दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता और मोक्ष की प्राप्ति होती है –

कुम्भ राशि गते जीवे मेषराशि रवौ।
हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृतिः वर्जनम्।।
लोके कुम्भः इतिख्यातः जानीयात सर्वकामदः।
गंगायां स्नानं माहात्म्य नालं वक्तुं चतुर्मुखः।।[4]

इन दिनों गंगा में स्नान–दानादि करने पर मनुष्य को हजारों अश्वमेध यज्ञ और सैकड़ों वाजपेय यज्ञ करने तथा सारी पृथ्वी की लाख बार प्रदक्षिणा करने से जो पुण्य प्राप्त होता है वह केवल कुम्भ स्नान से ही प्राप्त हो जाता है।

**प्रयाग कुम्भ**

माघ मास की अमावस्या को जब गुरु वृषभ राशि में तथा सूर्य एवं चन्द्रमा मकर राशि में संचरण करते हैं तो प्रयागराज इलाहाबाद में कुम्भ पर्व मनाने की परम्परा रही है –

मकरे च दिवानाथे वृषराशि गते गुरौ।
प्रयागे कुम्भ योगो वै माघ मासे विघुक्षये।।[5]

गंगा–यमुना–सरस्वती संगम पर इस महापर्व के शुभावसर पर स्नान किया जाता है इसलिए अनेक महात्मा एवं सिद्ध महापुरुष दो–अढ़ाई मास पूर्व ही पुण्यतीर्थ पर आकर अपने–अपने धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ कर देते हैं। यहाँ स्नान–दान का अलौकिक फल मिलता है साथ ही मनुष्य को अनेक भौतिक एवं आधिभौतिक पापों से भी मुक्ति मिलती है। सूर्योदय से डेढ़ घड़ी पूर्व जब लालिमा युक्त आकाश हो और कुछ–कुछ तारे दिखाई देते हो तब स्नान जापादि के लिए उत्तम काल माना गया है – अरुणोदय बेलायां तस्या स्नानं महाफलम्।[6]

इस तीर्थ पर दान की पराकाष्ठा से कुम्भ मेले की इतनी कीर्ति फैल गई कि चारों दिशाओं से लाखों लोग प्रेरित होकर यहाँ आकर दान–स्नान किया करते थे, करते हैं तथा करते रहेंगे।

**उज्जैन कुम्भ**

उज्जैन शिप्रा नदी तट पर स्थित है जो महाकालेश्वर का क्षेत्र है। पौराणिक काल से ही वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को जब सिंह राशि में गुरु होते हैं, मेष राशि में सूर्य और चन्द्रमा तुला राशि में हो तो उस वर्ष अवन्तिकापुरी उज्जैन में शिप्रा नदी के तट पर कुम्भ महापर्व मनाए जाने की परम्परा प्रारम्भ से ही है। इसको सिंहस्थ पर्व भी कहा गया है। स्कन्दपुराण के अनुसार इसमें स्वाति नक्षत्र का भी योग होता है –

सिंह राशि गते जीवे मेषस्थे च दिवाकरे।
तुलाराशि गते चन्द्रे स्वाति नक्षत्र संयुते।।[7]

उज्जयिनी का प्राचीन नाम अवन्तिपुरी था। यह विक्रमादित्य की राज्यस्थली थी। उन्होंने शकों को परास्त कर, नर्मदा से पंजाब की उत्तरी सीमा तक राज्य विस्तार कर विक्रमी सम्वत् चलाया और उज्जैन के वैभव को चोटी तक पहुँचाया।[8]

**नासिक कुम्भ**

नासिक महाराष्ट्र में गोदावरी नदी तट पर स्थित है। दक्षिण में गोदावरी गंगा की तरह पूजनीय रही है स्कन्दपुराणानुसार जब वृश्चिक राशि में गुरु संचरण करते हैं तब नासिक में कुम्भ पर्व पड़ता है।[9] इस अवसर पर श्रद्धालु लोग गोदावरी के पावन तट पर स्नान करते हैं। नासिक क्षेत्र में सीता गुफा है, जहाँ पंचवटी वृक्ष थे, जिससे इस स्थान का नाम पंचवटी पड़ा। वनवास के समय राम ने भी इसी स्थान पर निवास किया था। जिससे इसकी पवित्रता और बढ़ गई।[10]

**निष्कर्ष**

तीर्थों से सम्बन्धित उत्सव वर्ष भर हमारे देश में मनाए जाते हैं। कुम्भ पर्व पर भी ऐसे ही कार्यों द्वारा बहुत बड़े मेले का आयोजन होता है। यह पर्व चार तीर्थ स्थलों हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में मनाया जाता है। हर निश्चित तीर्थ पर यह बारह वर्ष बाद आता है। बिना आमन्त्रण–नियन्त्रण के लोग इस उत्सव में आकर स्नान–दान कर पापों का नाश एवं पुण्य का अर्जन करते हैं।

**सन्दर्भ–सूची**


1. शब्द स्तोभ महानिधि
2. राणा प्रसाद शर्मा 'पौराणिक कोश', पृ0, 43
3. स्कन्द पुराण
4. धर्म सिन्धु, पृ0, 415.2.5
5. स्क0पु0 काशी खं0, 7.57
6. पद्म पु0, उ0खं0, 79.64
7. स्क0पु0, अव0खं0, 83.13
8. वैदिक संस्कृति, पौराणिक प्रभाव, पृ0, 38
9. स्क0पु0, प्रभास खं0, 30.35
10. वैदिक संस्कृति, पौराणिक प्रभाव, पृ0, 39